सामान्य ज्ञान दर्पण

नवम्बर 2018

वर्ष 31 चतुर्थ अंक

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान

13 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

26 क्रीड़ा जगत्

29 18वें एशियाई खेल (जकार्ता-पालेमबांग 2018) पदक तालिका में भारत का आठवाँ स्थान

32 विज्ञान समाचार

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

39 सारभूत तत्व कोष

लेख

43 आर्थिक लेख—विनिर्माण क्षेत्र में भारत के बढ़ते कदम

45 स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख—निपाह विषाणु की घातकता

47 द्विपक्षीय सम्बन्ध लेख—सम्भावनाओं की नई बुनियाद पर भारत-तुर्की सम्बन्ध

49 कॅरियर लेख—उत्तर प्रदेश सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा—2018

हल प्रश्न-पत्र

54 छत्तीसगढ़ पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग: सहायक विकास प्रसार अधिकारी परीक्षा, 2017

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया क्लर्क प्रारम्भिक परीक्षा, 2018

63 तर्कशक्ति

66 आंकिक परीक्षा

69 English Language

72 मध्य प्रदेश महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता प्रशिक्षण हेतु प्रवेश परीक्षा, 2018

79 आगामी राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा, 2018 हेतु विशेष हल प्रश्न

83 राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2017 [लेवल 2 (कक्षा VI-VIII)]

101 आगामी आर.आर.बी. लोको पायलट/तकनीशियन भर्ती परीक्षा, 2018 द्वितीय चरण भाग-'अ' हेतु विशेष हल प्रश्न

108 आगामी एस.एस.सी. द्वारा आयोजित केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल में कॉंस्टेबिलों की भर्ती परीक्षा, 2018 हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

114 संवैधानिक जानकारी—लोकतांत्रिक तथा कल्याण-कारी राज्य की स्थापना में नीति निदेशक तत्वों की भूमिका

116 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18—कृषि क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, सूचना, संचार एवं प्रचार सेवाओं के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में

119 ज्ञान वृद्धि कीजिए

121 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

सफलता का प्रथम सोपान : रचनात्मक चिन्तन

Everybody has a creative potential and from the moment you can express this creative potential, you can start changing the world.

—Panto Coelho

फ्रांसीसी शासक एवं प्रसिद्ध सेनापति बोनापार्ट नेपोलियन ने एक से अधिक बार कहा था—"असम्भव कुछ भी नहीं है. 'असम्भव' शब्द मूर्खों के शब्द-कोश में पाया जाता है."

सम्भवतया उक्त कथन में सत्य है— बशर्ते कि कोई व्यक्ति बुद्धिमान व्यक्ति की भाँति चिंतन एवं आचरण करें. बुद्धिमत्ता की पहचान यह है कि हमारा निर्भय चिन्तन विधेयात्मक अथवा सकारात्मक हो. मनोवैज्ञानिक डॉ. नारमन विन्सेंट पीले के अनुसार विधेयात्मक चिन्तन व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाता है और निषेधात्मक चिन्तन उसको सफलता से दूर ले जाता है. सकारात्मक चिन्तन उपलब्ध साधनों के सकारात्मक उपयोग की प्रेरणा प्रदान करता है और नकारात्मक चिन्तन पद्धति कार्य-प्रणाली को नकारात्मक बना देती है. सकारात्मक चिन्तन अनुकूल साधनों को अपनी ओर आकर्षित भी करता है. और अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण भी करता रहता है. सकारात्मक चिन्तन संकल्प, साहस एवं पुरुषार्थ को जाग्रत करके साधक को सफलता के सोपानों के प्रति उन्मुख कर देता है. सकारात्मक चिन्तन को हम एक चुम्बक की भाँति आकर्षक शक्ति से युक्त मानते हैं, चुम्बक कूड़े के ढेर में से भी लौह-कणों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, प्रतिकूलतम एवं विषमतम परिस्थितियों में से भी अनुकूल शक्तियाँ सकारात्मक चिन्तन की ओर खिंची चली आती हैं. जो व्यक्ति प्रकाश की कल्पना करता है, वह अन्धकार में भी प्रकाश की किरणों का दर्शन करता है; जो अन्धकार की परिकल्पना में जीवन की सार्थकता मानता है. वह प्रकाश में भी अन्धकार की आशंका से भयभीत बना रहता है. डिसरैली ने ठीक ही कहा है कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु संकल्प शक्ति पर निर्भर है. संकल्प सकारात्मक चिन्तन का ही शिव पक्ष है जो दृढ़ इच्छाशक्ति एवं एकनिष्ठ क्रियाशीलता का उत्प्रेरण करता है. आधा पात्र भरा होने पर एक व्यक्ति कहता है कि यदि इसको पूरा भर दिया जाए तो कैसा अच्छा रहे? अन्य व्यक्ति कहता है कि यदि यह पूरा खाली हो जाए, तो कितना अनर्थ हो जाए? चिन्तन की उक्त पद्धतियाँ व्यक्ति को सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रयत्न करने की प्रेरणा देती हैं. मूर नामक विचारक का कथन हमारा मार्ग-दर्शक होना चाहिए—अच्छे काम करने के लिए धन की कम आवश्यकता पड़ती है, उसके लिए अच्छे हृदय और संकल्प की आवश्यकता अधिक होती है. विषमतम परिस्थितियों में भी जो व्यक्ति अपना मनोबल बनाए रखते हैं, अच्छे परिणामों की आशा करते हैं, वे असफल होने पर भी सफलता के द्वार पर खड़े रहते हैं, उनके असफल होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है. महात्मा गांधी कहा करते थे कि सत्याग्रही की कभी हार नहीं होती है, क्योंकि उसका संकल्प शुभ होता है और उसका चिन्तन सकारात्मक होता है, क्योंकि वह विपक्षी का भी हित-चिंतन करता है. सकारात्मक चिन्तन व्यक्ति को सदैव उत्फुल्ल एवं उज्ज्वल भविष्य के प्रति आस्थावान बनाए रखता है. उसकी कार्य-प्रणाली रचनात्मक होती है और वह प्रत्येक पल और पग को सम्भावनाओं से परिपूर्ण देखता है. इसके विपरीत दिशा में जाने वाले व्यक्तियों को नेपोलियन सदृश कर्मशील एवं पुरुषार्थी व्यक्ति ने यदि मूर्ख का अभिधान प्रदान किया था, तो इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है.